क्या जैव विविधता राजनीति विज्ञान की शिक्षा प्रदान कर सकती है?

युवान एविस

एक काले सिर वाला ओरियोल बैंगन के खेत के बीचों-बीच लगे एक पपीते के पेड़ पर मँडरा रहा था, उस पर लगे एक अधपके पपीते को कुतर रहा था और शाख पर बैठे हुए अपने चूज़ों को खिला रहा था। थोड़ी देर बाद वयस्क पक्षी उड़कर पास के एक आँवले के पेड़ पर चला गया और कनखियों से चूज़ों को देखता रहा, जैसे यह देख रहा हो कि क्या वे खुद से भोजन कुतरना शुरू करेंगे।

अक्टूबर, 2022 के अन्त में, पल्लुयिर ट्रस्ट से हम चार प्रकृति शिक्षक स्थानीय बच्चों के साथ गतिविधियाँ करने के लिए पूरे दो दिन कोयंबतूर, तमिलनाडु के पिचनूर गाँव में थे। पहले दिन हम पक्षी देखने गए (जहाँ हमने काले सिर वाले ओरियोल का व्यवहार बारीकी-से निहारा), नेचर जर्नलिंग की और दोपहर में कुछ खेल खेले। लगभग 50 बच्चे आए थे - कुछ बच्चे पिचनूर और आसपास के गाँवों से थे और कुछ गाँव से थोड़ा बाहर बसी एक आदिवासी बस्ती से। जातिगत विभाजन इस क्षेत्र में, यहाँ तक कि बच्चों में भी, इतनी गहराई तक व्याप्त है कि एक बाहरी व्यक्ति होने के बावजूद मुझे भी यह थोड़ा-थोड़ा समझ आ रहा था। लेकिन यह खुलकर सामने तब आया जब बच्चे दोपहर का खाना खाने के लिए अलग-अलग बैठे। और तब, जब मैंने उन्हें छोटे समूह बनाकर उनमें बैठाने की कोशिश की तो कुछ बच्चे न तो अपनी जगह से हिले, न ही समूह में आए। इसलिए समूह बनाने का काम मैंने शिक्षक पर छोड़ दिया।

तितलियाँ साथ-साथ

अगला आधा दिन बच्चों की प्रिय फरमाइश तितलियों के लिए था। सुबह हम गाँव के बाहरी इलाके में लम्बी सैर पर निकल गए थे, हाथ में फील्ड गाइड और अवलोकन तालिका लेकर तितलियाँ ढूँढने। हमने कॉमन बैंडेड पीकॉक तितलियों (तमिल में, मय्रिल अज़गी) को गीली लाल मिट्टी के ढेर पर मिट्टी से पोषण चूसते (मड-पडलिंग करते) हुए देखा। एक बड़े पंखों वाली सहयाद्री तितली (सदर्न बर्डविंग, पोन्नअज़गी) नारियल के बगीचों के ऊपर गश्त लगा रही थी और जब भी वह हमारे सर के

फोटो: अस्वती अशोकन

पिचनूर गाँव में तितलियाँ ढूँढते और उनका अवलोकन करते हुए।

ऊपर से गुज़रती थी तो बहुत ही उत्साहित शोर मच उठता था। बगीचों और खाली पड़ी ज़मीन के आसपास पगडण्डियों के किनारों पर बहुत सारी चार छल्लों वाली (फोर-रिंग, नांग वेळयन्) तितलियाँ ज़मीन के करीब, खासकर किनारों पर उगी घास पर, हौले-हौले पंख फड़फड़ाते उड़ रही थीं। हमने अकाव (आक, कैलोट्रॉपिस) और नींबू के पेड़ पर क्रमशः प्लेन टाइगर (वेंदय वरियन्) और लाइम तितली (एलुमिच्चई अज़गी) का पूरा जीवन-चक्र भी देखा। अन्त में हम अपनी खोजों, अवलोकनों और सवालों को साझा करने, और एक-दूसरे को सुनने के लिए कुमिट्टीपति नदी के किनारे जा बैठे। कुछ बच्चों ने 25 से अधिक प्रजातियाँ देखी/पहचानी थीं। उसी दिन बाद में, उनकी एक अध्यापिका संध्या ने हमारे साथ भावविभोर हो अपना अनुभव साझा किया कि जाने कैसे, इस गतिविधि के दौरान बच्चों ने धीरे-धीरे एक-दूसरे से बात करना शुरू कर दिया था, और बीच गतिविधि तक आते-आते वे एक-दूसरे से खुलकर बातचीत करने लगे थे, एक-दूसरे को खोजने, पहचानने और निरीक्षण करने में मदद कर रहे थे। उन्होंने साझा किया कि यहाँ के सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के चलते कक्षा में ऐसा माहौल बनाने के लिए वे रोज़ाना संघर्षरत रहती हैं।

चेन्नई लौटने के बाद मुझे इस घटना ने कई दिनों तक सोच में डुबोए रखा। तितलियों, पक्षियों या

पेड़ों को निहारने की प्रकृति में ऐसा क्या था जो, चाहे सिर्फ चन्द घण्टों के लिए ही सही, इस गहराई से पैठे सामाजिक भेद को मिटा पाया था? क्या बात सिर्फ इतनी थी कि एकसाथ तितली को देखते समय जाति अप्रासंगिक थी? या अधिक महत्वपूर्ण रूप से, क्या ध्यान देने, कुछ जानने और सवाल उठाने के लिए हमें सामाजिक संरचना को छोड़ना होगा? यदि नहीं तो क्या उन संरचनाओं को भी अवलोकन में शामिल करना होगा, और मानवीय रूप से बराबरी के स्तर पर पहुँच जाना होगा? बारीक अवलोकन करने और अन्य प्राणियों से जुड़ने से सम्बन्धित कुछ या कई बातें शायद हमें इन्सानों से भी जोड़ सकती हैं।

प्रकृति अवलोकन से संवेदनशीलता

एक महीने बाद, मैं अबेकस मोंटेसरी स्कूल के शिक्षकों के साथ स्कूली शिक्षा के एक प्रमुख घटक के रूप में जलवायु साक्षरता को एकीकृत करने के सम्भावित तरीके साझा कर रहा था। समापन चर्चा के दौरान मेरी सहयोगी कावेरी, जो मानविकी और राजनीति विज्ञान की शिक्षिका हैं, ने एक बहुत ही दिलचस्प बात कही। उन्होंने देखा है कि उनके नौवीं कक्षा के बच्चे, जो प्राथमिक कक्षा से ही 'कृषि, पर्यावरण और समाज कार्यक्रम' (जिसे शिक्षकों के साथ मिलकर डिज़ाइन करता हूँ) में शामिल रहे थे, वे अन्य कक्षाओं के बच्चों की तुलना में कहीं अधिक राजनीतिक, सक्रिय चर्चाकर्ता और खुद-ब-खुद सोच-विचार करने वाले बन गए थे। पता नहीं कैसे पर उनमें इससे बदलाव आया था - पिछले तीन वर्षों के दौरान अनुभव की गई प्रकृति-आधारित शिक्षण पद्धति से, जिसमें अधिकांश मॉड्यूल चेन्नई में जैव-विविधता का अवलोकन करने पर केन्द्रित थे। बच्चे इन तौर-तरीकों को जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोग करने लगे थे। कावेरी ने भी स्वतंत्र रूप से यह कहा कि 'प्रकृति के बारीक अवलोकन के कौशल का अभ्यास करने में ऐसा कुछ है' जो समाज और इतिहास से बच्चों को जोड़ता है और इन पर चिन्तन करवाता है। दिसम्बर में, बैंगलुरू में दूसरे ग्रीन लिटरेचर फेस्टिवल के मंच पर मैंने भारत के प्रतिष्ठित पर्यावरण इतिहासकारों में से एक प्रोफेसर महेश रंगराजन को यह कहते हुए सुना – अन्य जीवों को उनकी विविधता और विभिन्न पारिस्थितिकी में एकसाथ रहते देखना 'मनुष्य को सभी तरह की भिन्नता या परायेपन के प्रति संवेदनशील बनाता है'।

वे क्या तरीके हैं जिनमें जैव-विविधता एक राजनीति विज्ञान शिक्षिका बन जाती है? कई लोग अन्य प्रजातियों से अनेक परिवर्तनकारी राजनीतिक विचार ग्रहण कर रहे हैं। एलेक्सिस पॉलीन गम्स को व्हेल,

डॉल्फिन और सील से प्रतिरोध खड़ा करने और पूंजीवाद को मिटाने के तरीकों की गहन सीख मिली - अपनी बेहद शानदार किताब *अनड्राउण्ड* (Undrowned) से - समुद्री स्तनधारियों से अश्वेत नारीवादी सबक। ज्याँ पॉल गैगनन ने अपने तीन भागों में लिखे निबन्ध में गैर-इन्सानी लोकतंत्र पर प्रकाश डाला है, और 'अन्तरप्रजाति-चिन्तन' का उपयोग कर मधुमक्खियों, बोनोबोस, दीमकों और सूक्ष्मजीवों से बहुतेरे अपनाने लायक लोकतांत्रिक सबक लिए हैं जो मानव समाज पर लागू हो सकते हैं। साथ ही, इस बारे में प्रेरक विचार रखे हैं कि एक बहु-प्रजाति (बहुरंगी) लोकतंत्र कैसा हो सकता है। *इवोल्युशन्स रेनबो* (Evolution's Rainbow) पुस्तक में जोअन रफगार्डन हमें बताती हैं कि कैसे कीटों से लेकर मछलियों तक अन्य जीव हमें विविधतापूर्ण समाज, खासकर लैंगिक विविधतापूर्ण समाज में रहना सिखा सकते हैं। प्रकृति अत्यन्त क्वीर (queer) है - यह नर-मादा या स्त्री-पुरुष के खानों में नहीं बँटी है, यह विविधरंगी, विविध स्वभावी है। खालिस बाइनरी (पूर्णत: नर या मादा में सिमटी) प्रकृति मिलना मुश्किल है।

लेकिन एक अधिक सरल स्तर पर – बच्चे में प्रकृति का नियमित अवलोकन करने से कैसे और किस तरह की सूक्ष्म राजनीतिक समझ पनपेगी?

भिन्नता और सह-अस्तित्व

खुद के अनुभव से और बहुत-से शोध पढ़कर मुझे समझ में आया कि प्रकृति के अन्य हिस्सों के साथ सघन जुड़ाव से जो सरलतम और अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनैतिक मूल्य से हमारा वास्ता पड़ता है, वो है 'विविधता'। बच्चे देखते हैं और परोक्ष रूप से सीख जाते हैं कि अत्यन्त गैर-बाइनरी बहु-प्रजाति (बहु-जीवी) दुनिया में कभी भी केवल एक स्वर, एक कथा, एक कहानी नहीं होती है। शिक्षक को किसी को भी यह सत्य बताने या सिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। 'भिन्नता फिर भी सह-अस्तित्वता' वह लेंस है जिसके ज़रिए यह बात हमें समझ आने लगती है। अन्य प्राणी हमसे अवचेतन रूप से बात करते हैं। वे हमें स्पष्ट रूप से बताते हैं - धर्मशास्त्री कैथरीन केलर के शब्दों में - कि "भिन्नता भी एक तरह का सम्बन्ध है; हमारा अस्तित्व सिर्फ हमारी इस भिन्नता के परस्पर सम्बन्धों की वजह से है"।

जैव-विविधता का अवलोकन हमें उपभोक्ता/प्राप्तकर्ता की उस सोच से बाहर निकाल सकता है जिसमें पूंजीवादी संस्कृति ने अधिकांश मनुष्यों को जकड़ रखा है। प्रकृति के प्रत्यक्ष अवलोकन - जो अपने आप में राजनीतिक प्रतिधारा (मौजूदा मान्यताओं, प्रथाओं का विरोध करने वाले) है - हमें गहन अर्थों और

उद्देश्यों के सक्रिय खोजकर्ता बनाते हैं। तेवा के वरिष्ठ शिक्षक ग्रेगरी कैइती अपनी पुस्तक *लुक टू दी माउंटेन* में लिखते हैं, "यह अवलोकन करना कि प्राकृतिक दुनिया में वस्तुएँ कैसी होती हैं, यह मूल निवासियों की स्थानीय संस्कृतियों की कुछ सबसे प्राचीन और आध्यात्मिक शिक्षाओं का आधार है। प्रकृति प्रथम शिक्षक है और बहुत-सी प्रक्रियाओं के मॉडल उदाहरण भी मुहैय्या करवाती है। 'प्रकृति' को निहारने का तरीका सीखने से हमारी अन्य चीज़ों को समझने की क्षमता विकसित होती है।

गौर से देखें तो ज़रा

जब मैंने अपनी टीम के साथियों और साहसी युवा प्रकृति-शिक्षकों निकिता और शर्लट के साथ इस बारे में चर्चा की तो उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने और उनके दोस्तों ने सहजता से सड़कों के किनारे, झाड़ियों में, घास आदि को रोज़ाना ध्यान से देखने की आदत विकसित कर ली थी, खासकर 'वह सब देखने-ढूँढने की जो आसानी-से नहीं दिखता'। उनका मानना था कि यह विवेचनात्मक सोच की शुरुआत थी, जो उनके जीवन के अन्य क्षेत्रों और लोगों के साथ बातचीत में भी झलकने लगी थी। अदृश्य या अदृश्य किए गए (हाशियाकृत) को खोजने का सतत प्रयास। पॉण्डीचेरी के मेरे एक मित्र और साथी प्रकृति-शिक्षक सुरेंद्र बूबालन ने समता का एक और पहलू साझा किया जो उनके सामने तब प्रकट हुआ जब वे अपनी प्राथमिक कक्षा के बच्चों को पक्षी निहारने और उनके अवलोकन के लिए ले गए थे। अब वे बच्चों को पढ़ाकू या अल्प-पढ़ाकू, मेधावी या बुद्धू की नज़र से नहीं देखते – जैसा देखने के लिए कभी-कभी पारम्परिक या सीमित कक्षा उन्हें मजबूर करती है।

एक प्रकृति शिक्षक के रूप में व्यक्ति जिन राजनीतिक-शैक्षिक प्रक्रियाओं को अपनाता है, वह भी पारम्परिक कक्षा निर्देशों से काफी भिन्न होती हैं - जहाँ सारा ध्यान और सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में होती है - जिसे मैंने 'नियंत्रण का शिक्षाशास्त्र' कहना शुरू कर दिया है। किसी दलदली भूमि या पार्क में यदि कोई मेंढक या बगुला कुछ और दिखाने/सिखाने की तरफ ले जाता है, और (बच्चे या) सीखने वाले का रुझान मेरे तय प्लान की बजाय उस कुछ और सीखने/देखने की तरफ होता है तो मैं हमेशा इसके लिए जगह बनाना सीखता हूँ। इस तथ्य से अवगत रहते हुए कि उस परिवेश में मैं हमेशा एक शिक्षक भी हूँ और अन्य सभी की तरह शिक्षार्थी भी हूँ – जहाँ प्रकृति शिक्षक की भूमिका निभाने लगती है।

जब सीखना वास्तविक दुनिया से है तो शिक्षक के पास अपना नियंत्रण छोड़ने और एक 'सहकारी और सहभागी शिक्षाशास्त्र' विकसित करने

के अलावा कोई और चारा नहीं होता है - जिसमें सत्ता, ज्ञान और फोकस बहुत खूबसूरती से, कभी-कभी बराबरी से, विविध-लोगों, और विविध प्रजातियों में वितरित होता है। ये बहु-जीवी मूल्य कई आदिवासी समुदायों, जैसे इदु मिश्मी, संथाल, जेनु कुरुबा और कट्टुनायकन, में पहले से ही मौजूद हैं और प्रचलित हैं।

चुनौती देते सवाल

पल्लुयिर ट्रस्ट और पुडियाडोर संगठन के सहयोग से हम एक यूथ क्लाइमेट इंटर्नशिप चलाते हैं जो बदलती जलवायु के चलते असुरक्षित तीन क्षेत्रों - उरुर-ओल्कोट कुप्पम, रामापुरम, और कक्कण कॉलोनी – में चलने वाला एक कार्यक्रम है (तमिल में पल्लुयिर का अर्थ है जैव विविधता/बहुप्रजाति/सभी तरह का जीवन, और पुडियाडोर एक संगठन है जो शिक्षा के माध्यम से समूचे चेन्नई में हाशियाकृत समुदायों को सशक्त बनाने के लिए काम करता है)। इस कार्यक्रम के ज़रिए हम चेन्नई की पारिस्थितिकी और सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को गहराई से देखने और समझने के लिए 10 क्षेत्रीय दौरे करते हैं। इसमें हम कानून और इसकी एडवोकेसी के तरीके सीखते हैं, हम अपने आसपास रहने वाली अन्य प्रजातियों और आवासों का अध्ययन करते हैं, और युवा अपने इलाके के लोगों को नियोजित सैर (अवलोकन) और विभिन्न अन्य गतिविधियों में शामिल करते हैं। पिछले दिसम्बर के रविवार की ठण्डी सुबह को उरुर कुप्पम में हमने 'प्रश्न करने' पर आधे दिन सघन बातचीत और चर्चाएँ कीं। सबसे पहले सुबह हमने 'जिज्ञासा मानचित्र' बनाया, जो विस्मय और जिज्ञासा की हमारी मांसपेशियों को सक्रिय रूप से मज़बूत करने का एक अभ्यास है।

सप्ताह भर से सिक्के जितने बड़े जेलीफिश जैसे जीव 'ब्लू बटन' जो समुद्र की सतह पर तैरते रहते हैं, शहर के समुद्रतट पर जमा हो रहे थे। अमूमन यह घटना साल में दो या तीन बार होती है, कभी-कभी तेज़ ज़मीनी हवाओं या भूकम्पीय घटनाओं की वजह से, और कभी कुछ अज्ञात कारणों से। हमने हालिया ब्लू बटन किनारे लगने के कारणों पर विचार किया, फिर इसके बारे में प्रश्न पूछे – जिसमें कब, क्यों, क्या, कैसे, कौन, और इन शब्दों के दायरे से भी परे कुछ प्रश्न किए। हमने यह सुनिश्चित किया कि हम उन सवालों से परे सवाल पूछेंगे जिनके बारे में दिमाग आसानी-से सोच सकता है और जिन्हें सोचने में दिमाग को थोड़ी मेहनत करनी पड़े, जो सचेतन रूप से हमारी जानने की क्षमता को चुनौती दें। फिर अपना-अपना जिज्ञासा मानचित्र बनाने के लिए हम समुद्र तट की ओर गए। सर्दियों का सूरज समुद्र क्षितिज से थोड़ा ऊपर चढ़ चुका था और धूप

गुनगुनी लग रही थी। कुछ मछुआरी-नावें सुबह-सुबह केकड़ा-जाल डालकर वापस आ रही थीं। एक समुद्री कछुआ ऑलिव रिडले मृत अवस्था में बहकर किनारे पर आ गया था, सम्भवतः किसी जाल फेंकने वाले ट्रॉलर जहाज़ की टक्कर से उसके खोल के नीचे दाहिनी ओर चोट लगी थी। हम सोलह लोगों में से प्रत्येक ने तट पर एक प्राणी या दृश्य को चुना और उससे जुड़ी अपनी जिज्ञासा व्यक्त की। उन्हें उकेरा और रंगा, फिर ऐसे सवालों का एक नक्शा बनाया जो सचेतन रूप से हमारी जिज्ञासा को कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकाल रहे थे। सजीले (डेकोरेटर) कृमि, छोटे-पतले-लम्बे शंख, कौवे, सीपियाँ, भूतिया केकड़े (Ghost crabs), गूज़ बार्नेकल, सैंड स्टार फिश और एक समुद्री कछुए ने हमें अपने आश्चर्य करने और जानने का अभ्यास करने में मदद की। "समुद्र के अन्दर बार्नेकल सीपियाँ कैसे बनती हैं?" "कैसे कोई सीपी अपने खोल को अन्दर से नरम और बाहर से सख्त बना देती है?" "कछुआ पानी के अन्दर कितनी दूर तक देख सकता है?" "छोटे-पतले-लम्बे शंख को पेंच जैसा आकार कैसे मिलता है?" "इन खाली खोलों (सीपियों-शंखों) के

फोटो: यूधान एविस

चेन्नई शहर के समुद्रतट के किनारे पर जैली फिश जैसे जीव - ब्लू बटन।

अन्दर के प्राणियों का क्या हुआ?" "क्या कछुए सपने देख सकते हैं?"

जिज्ञासा ज़िन्दा रखेगी

रोज़ाना के जीवन में जानना, सवाल करना एक परिवर्तनकारी राजनीतिक कार्य है। वे पृथ्वी पर पूंजीवादी अस्तित्व की संरचनात्मक असमानताओं और पैटर्न को कायम रखने वाली सदियों पुरानी, अक्सर कालविरुद्ध, सामाजिक संरचनाओं और मिथकों को बदलने में मदद करते हैं। जिज्ञासा राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक सतत पुनर्कल्पना को जीवित रखेगी - जो शायद एक सक्षम प्रजाति की पहचान है।

युवान एविस: लेखक, प्रकृतिवादी, शिक्षक और एक्टिविस्ट। वर्तमान में, अबेकस मॉण्टेसरी स्कूल में 'फार्म, पर्यावरण और समाज' कार्यक्रम का समन्वय करते हैं। उन्होंने दो किताबें और कई लेख लिखे हैं। शायद सैंक्चुअरी के अब तक के सबसे कम उम्र के ग्रीन टीचर पुरस्कार प्राप्तकर्ता, युवान सबसे बेहतरीन, सबसे करिश्माई प्रकृति के शिक्षाविदों में से एक हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: प्रतिका गुप्ता: विज्ञान और गणित विषय उन्हें बेहद पसन्द हैं। वे *एकलव्य* द्वारा संचालित विज्ञान पत्रिका *स्रोत* की सम्पादक हैं और अपनी सम्पादकीय कैंची का बखूबी इस्तेमाल करती हैं। उन्हें भाता है, गीत सुनना और साथ गुनगुनाना। और उनके हिसाब से दोस्त हों तो बच्चों जैसे!

यह लेख *विकल्प संगम*, जनवरी 30, 2023 से साभार।

सैंड स्टार फिश